हिन्दी अध्यापन पद्धति में समुपदेशन की भूमिका

डॉ. राजश्री उमेश देशपांडे
प्राचार्य, श्री.म.ता.शा.अ.म.
कोल्हापूर.

प्रास्ताविक :

समुपदेशन यह सभी विषयों के अध्यापन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । सभी विषयों के अध्यापक अपने छात्रों को मार्गदर्शन करते है । जहाँ मार्गदर्शन है, वहाँ समुपदेशन है ही । समुपदेशन के बीना मार्गदर्शन अधूरा हैं । भाषा शिक्षक के लिए मार्गदर्शन करते वक्त समुपदेशन का कार्य ज्यादा तौर पर करना पडता है, क्योंकि भाषा में विचारों की भावनाओ की, भावों की अभिव्यक्ति होती है । छात्र की अभिव्यक्ती संभाषण तथा लेखन इन भाषा कौशलों के साथ होती है । रचनाभ्यास में छात्र की समस्याओं का पता अध्यापक को लगता है तथा नौदानिक कसौटी के माध्यम से भी छात्र की समस्याओं का पता चलता है । तो उन समस्याओं को ध्यान में लेकर, छात्र के वर्तनाविष्कार को समझकर भाषाअध्यापक मार्गदर्शन के साथ साथ समुपदेशक की भूमिका बडे प्रभावी ढंग से निभाता है ।

छात्र हिन्दी का अध्ययन द्वितीय भाषा के रूप में करता है । तो छात्र शिक्षक भी द्वितीय भाषा तथा राष्ट्रभाषा के नाते हिन्दी अध्यापन पद्धति के बारे में सोचता तथा कार्य करता है । इसलिए हिन्दी अध्यापन पद्धति में समुपदेशन की भूमिका महत्वपूर्ण है ।

- **समुपदेशन का अर्थ :**

  समुपदेशन यह मार्गदर्शन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण हिस्सा समझा जाता है । उसको सहप्रेरण ऐसा भी कहा जाता है । समुपदेशन यह मुक्त एकदूसरे के सामने चलनेवाली प्रक्रिया है । अपनी समस्याओं को खुद सुलझाने की क्षमता समुपदेशन का प्रधान हेतू रहता है ।

- **समुपदेशन की परिभाषाएँ :**

  'समुपदेशन पाने किसी व्यक्ती की समस्याएँ सुलझाने के लिए पाठशाला अथवा संस्था की व्यक्तिगत स्त्रोत का इस्तेमाल करना ।' - हम्प्रे और डक्सलर

  'समुपदेशन याने निश्चित संरचना से युक्त मान्यतादर्शक रिश्तेदारी है, जो ग्राहक को एक मात्रा में खुद का आकलन संपादन करने में मान्यता देता है और व्यक्ती को उसके नये उद्बोधन की प्रकाश में सकारात्मक कदम बढाने में सामर्थ्यशाली बनाता है।'

- कार्ल रॉजर्स.

*** समुपदेशन की विशेषताएँ :**

१) समुपदेशन अध्ययन केंद्रित प्रक्रिया है ।

२) समुपदेशन प्रक्रिया द्वारा वास्तव का पता चलता है ।

३) समुपदेशन में प्रत्यक्ष चर्चा द्वारा सही समस्या का रूप सामने आता है ।

४) समुपदेशन छात्र के भावना तथा प्रेरणा संबंधी वर्तन समस्याओं को समझने में सहायता प्रदान करता है ।

५) समुपदेशन यह एक व्यावसायिक सेवा है ।

*** संशोधन समस्या का महत्व :**

हिन्दी भाषा अध्यापन-अध्ययन में समुपदेशन का बडा महत्व है, क्योंकि समस्याग्रस्त बालक अपनी समस्याओं के प्रति जागरूक नहीं होता । लेकिन वह बेचैन रहता है । उन भाषा-अध्ययन संबंधी समस्याओं को लेकर, तभी उसको जरूरत रहती है किसी ऐसे व्यक्ति की जो उससे उम्र में बडा हो, अनुभव संपन्न हो, तथा उसकी निजी मर्यादाओं को समझ सके और कुछ सुझाव दे ताकि उसकी समस्याओं का हल मिले ।

समुपदेशन से छात्र को उसकी भाषा अध्ययन संबंधी समस्याओं का निश्चित स्वरूप ध्यान में आता है और उसको सुलझने में बडी मात्रा में मदद मिलती है, ताकि वह आसानी से उन समस्याओं का सामना कर पाता है और समस्याओं से मस्तिष्क पर पडे दबाव को हलका करने में कामयाब रहता है तथा सामाजिक तथा व्यक्तिगत समायोजन कर पाता है । समुपदेशन से समस्याग्रस्त छात्र के मन का संभ्रम दूर होने में बडी सहायता मिलती है और वह हिन्दी को आत्मसात कर सकता है ।

- **संशोधन के उद्देश :**

१) हिंदी भाषा अध्ययन में समुपदेशन के महत्व को स्पष्ट करना ।
२) हिंदी भाषाध्यापक और समुपदेशन के परस्पर संबंध को समझ लेना ।
३) छात्र के लिए समुपदेशन के महत्व की जागृती करना ।
४) छात्रों की समस्याओं को सुलझाने की वृत्ति को बढावा देना ।

- **समुपदेशन प्रक्रिया :**

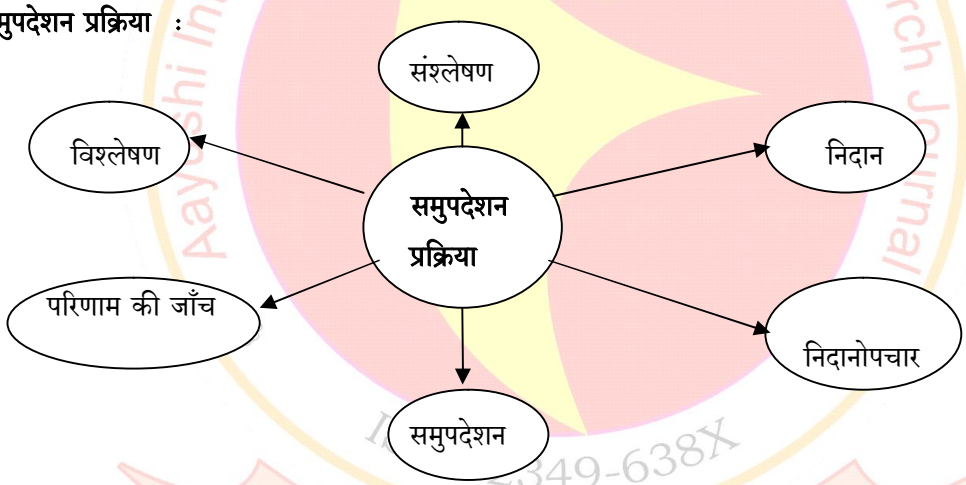

आकृती क्र.१.१

आकृती क्र.१.१ में समुपदेशन प्रक्रिया के सोपान बताए गये है ।

विश्लेषण से वास्तव को समेटा जाता है । संश्लेषण में जो समेटा गया है, उसको संघटित रूप में रखा जाता है । फिर समस्या के कारणों का पता चलता है और निदान किया जाता है । उसके बाद निदान के मुताबिक उपचार निश्चित किये जाते है । समुपदेशक समस्या वर्तन को समायोजन में बदल देता है और फिर अंत में परिणाम की मात्रा के प्रभाव की जाँच पडताल की जाती है । मात्रा की यशस्विता को परखा जाता है ।

भाषाअध्यापक इन सभी सोपानों को पार करता है, तो छात्र की हिन्दी भाषा अध्ययन संबंधी सभी समस्यायें सुलझ जाती है और वह भाषाभिव्यक्ति बडे प्रभावशाली ढंग से करता है।

● भाषा अध्यापन और समुपदेशन :

पूरी कक्षा के छात्रों के ध्यान में लेकर अध्यापक भाषा अध्यापन का कार्य करता है । लेकिन जब किसी छात्र के भाषा अध्ययनसंबंधी समस्या को देखता है तो केवल प्रभावी अध्यापन या रूचीपूर्ण अध्यापन को विचार अलावा उस समस्याग्रस्त छात्र की भाषा अध्ययनसंबंधी समस्याओं को जानने के लिए विभिन्न तंत्र, प्रयुक्तियों को अपनाना पडता है । साक्षात्कार यह इसके लिए महत्वपूर्ण साधन है । व्यक्तिगत रूप में उस समस्याग्रस्त बालक के लिए समुपदेशन के सभी सोपानों को पार करना छात्र और अध्यापक के लिए अनिवार्य है । समुपदेशन के लिए उसे व्यक्तिगत रूप में छात्र के लिए कार्य करना पडता है ।

छात्र के मन में हिन्दी भाषाभिव्यक्ति के प्रति किसी भी प्रकार की हिचकिचाहट नहीं रहती और पूरी कक्षा में हिन्दी भाषा लगन से अध्ययन करने का ऐसा वातावरण निर्माण होता है कि छात्र अहिन्दी भाषी न लगे । सहजता से वह हिन्दी समझ सकता है, बातचित कर सकता है, आसानी से हिन्दी सुनकर ग्रहण कर सकता है, उसे भाषण और लेखन द्वारा अविष्कृत कर सकता है । आत्मविश्वास के साथ हिन्दी में पत्रलेखन, कहानी लेखन, निबंध लेखन, इतिवृत्त लेखन आदि रचनाएँ कर पाता है ।

● निष्कर्ष :

हिन्दी अध्ययन में छात्रों को समस्याओं का सामना करना पडता है लेकिन वह अध्यापक को बताता नहीं । अध्यापक को हिन्दी पढाते वक्त मार्गदर्शन के साथ समुपदेशन की मात्रा का प्रयोग करना आवश्यक है । इससे छात्र के शैक्षणिक तथा सामाजिक समस्याओं को हल करने में सहायता मिलती है । छात्र के जीवन में समुपदेशन का बडा महत्व है ।

● संदर्भ :

१. दुनाखे अरविंद (१९९८) 'मार्गदर्शन आणि समुपदेशन', नूतन प्रकाशन, पुणे.
२. केणी, कुलकर्णी (२००८) 'हिन्दी अध्यापन पद्धति', व्हीनस प्रकाशन, पुणे.
३. गुळवणी मेघा (२०११) 'मार्गदर्शन आणि समुपदेशन', नूतन प्रकाशन, पुणे
४. जोशी, कदम (२०१२) 'हिन्दी भाषा आशययुक्त अध्यापन पद्धति', विद्या प्रकाशन, नागपूर.

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com